

मादा जैन कु रक्षा का का यश अन त शत ॥ ४ ॥

श्री धरत न
श्री कुमती न न
लिन वा गी ख ता प्रम
न न न न
जै रा

अ ता र न कं कं
म श्री खंद क्ष र त
ज म क ह का न वि म
रि र प्र स धू य ध न
य रा मा म व ती दा न
त जी वी म ज बी चा त मा
ते जी श त ॥ ४ ॥

जै व व म हा जै जै शा श त ॥
अ ता रा ता म क क व आ न मा
दा क रित हा मा ज त मा ता ता प
जा हा ज अ ता र स दू म अ ता
उ हा म क श त ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
कसि हन भगवता गुरु कसि हन भगवता गुरु कसि हन
का ॥ अत्र २२ ॥ लो हा हा गुरु का माहा वसि मात क म
क शत वी स भ न म ह प्र क का ध ना या म श त ॥ ४ ॥

ॐ का ती व गा का ती मा का ती व पु का ती त र्वा त र्वा
मा ता त कि वी मा म दि मृ त्रि त ता का ती त ता द वी

मद म ह नी ऊ ऊ ऊ द त स्वा हा अत्र १ अत्र न मा म
वी सि न ना भा क श त ॥ ४ ॥ ॐ ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं
ह्रिं ह्रिं ह्रिं व या न ध ता य ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं
ना य स्वा या य य क त ह या य वी सा मा त न या य श त ॥ ४ ॥ ॐ
मा त नि ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं ह्रिं
य दि सा त जाल ता ति मा भा मा य य त र त स त म वी ध सा य

धर्मपाल १२ मं माहाजि गमलमाय च तथैत प्रनया गमनस्य त
कुं श्री गुरुज्या ग्या ह्रीं ह्रीं स त रू पं तद म न प्र स्वाहा ॥ धर्म
मं न च य तदा कि नी सा कि पु न मा गमल माय श त धा त र
कुं श्री गुरुज्या ग्या म प रान स्वाहा प्रि थि धन स्वाहा ॥ धर्म
१२ लख मं माहाजि न के म व मखू या जा त र ग म्ग
ल के ती का म म्ग श त ॥ ४ ॥ ॐ श्री गुरुज्या ग्या त म ल पु न

सि ता कि ह नू मं त स्या व स्वाय सि का प ता ह्रीं त स्वाहा ॥ ४ ॥
धर्म न सा वी क का म श त धा त र वी रू त म्ग या य त रू ह त
ॐ श्री गुरुज्या ग्या व द वी या शो ग्या रू हं का ल सा पी स्वाहा
ता रु त स्वाहा रु त रु स्वाहा ॥ ४ ॥ धर्म न सा द्वा वी का म धर्म
ना म्ग न व स ना म हा य स्या क थ स थि य के त म्ग या
ग जि य म व स हं य ह त र वी ध वी शो ग्या श त ॥ ४ ॥

ॐ श्री गुरुग्याग्या कि सनातीना दंव हंरु त स्वाहा ॥ ४४ ॥
नभात त्याकपू पशुत भात १२ ॥ ४॥ ॐ श्री गुरुग्याग्या धनं
दसुत सस्त्री हंरु त स्वाहा ॥ ४५ ॥ न पितका प्रक सखाता स
नाप जो सपक सतपूत चसुपा ल सत याजि हि तू हि य
भात २२ इत ४४ ॥ ॐ श्री गुरुग्याग्या नाना हंरु त स्वाहा ता
मि त्या त्या पुमु भात १२ ॥ ४॥ ॐ कि त स्वाहा जि कि त न त ग

श्री अजातरवनभात्याक हंन कि त ज्ञान का त प्रमं प्राप्र भात
त लाखा या जाजि भाति न सता प्र ज्वत त स त्या प्र म दू शत ॥ ४७ ॥
ॐ श्री गुरु ॐ श्री सि क स्वाहा धम हंरु भात ३ ॐ प्राजा जि विष्ण
न जाय मरु शत ॥ ४८ ॥ ॐ हंरु वाव चा कूट त गुरु सख पस्त भात
बिलाना गपुष्पा त लाज सत त स स फे ॐ त नि धू वि तो पन्या
सि यु ग इति वि क्रिया दु ध आनी च दा त वी जाना त हा लस
य त स म विर म उ जि मी प्र तात कू त पूर ॥ ॥ ॐ हंरु त जि

वेकठ तक राय सूक आत्रु पके स स थं ज्ञाय थुं स मला मा
जाणि साधे तनवा ताणि धूप दय के थ धूप मागुन म १२ दम पु
अशान गूव त्रु वि क्रि श य थ धूप कु थ ना अ न सो मि सा व स
शय ता ता या को मान्ये द न स तिल स इ दू मि सा यान
ना न व प्ररुतः ह थ अ त स ज न सा स नान रू प म रू द्या य र त

कू त द व पात्रु प त र ख हाः वा त कू स त हाः क त थ न स

स म ला मा ज सा ध वा ता ण धूप ता जी प्रा कू र क थ त र न त्र
यी विस्र मि ला ण प्री रू त न यी थ ध व थ न न ता त ता विस्र ण
शत ॥ ३॥ हि द व त न का मि र सि वि प्र र त स म ला ग धूप थ न
नू द ह वि स त मा रू र ता प रू र त र ता रू त द रू श त ॥ ४॥
ॐ दी दी दा की दा की हा का र ये स ज आ त के वा त के र स नि के
प त्र स के ग म र के वी य के अ रु के द का के र नी र क ज्ञा र्थ म
व दि खा द त वा हि म दा हा रु मा र ति नू स त मा हा द ण कि वा

२ॐ श्री गुरु ग्या का म स स्वा हाः आत्र २२ द्वा प न त्या क वृष
ॐ सैं ता रु ता ज्ञा ॐ :: आत्र ० स त्र या त म ना ॐ य क इ त स त्र
ना स या य इ त ॥ ४ ॥ ॐ ता क ति त्रै व ज्ञ मा त म नी ह्रीं रु त स्वा हा
आत्र ७ ल ख म् प्र ग ता न क र्ण न क मा त्रि ॐ इ त ॥ ४ ॥ ॐ
ॐ ह द व ति ह र व स्वा हाः :: आत्र १००० अ व ल च न मू सान प्रा रा
त्त ज प्र ७ स श य कू म का न रि य ॐ मि सा या त्र र वा का स थ ॐ

मि सा वि हा ना का य इ तः आत्र ११ ॥ ४ ॥ ॐ न ग र ग्या ग्याः ॐ
स त स त मू स ला मू स ला कू मी ना स्र ॐ ह त स्वा हाः मी सा
य प्र या ॐ य इ त आ १२ ॥ व मि स त मी सा त र ग र स त य ज स मू स ला स त ॐ स्र

ॐ ग र ग्या ग्या ॥ ७ ॥ ॐ कि नि मा त्र थ कि मा त्र सि त त ल ॐ ॐ श्री
मा हा द ॐ कि वा री र त मा त्र यि सा र मी लू श का स मा त्र
य ता त मा त्र मा त्र त रा रा ल पा ॐ न ता शी र का गि ह का गि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

लिङ्गद्वयपत्रश्रासनपत्रत्रयिष्यत्तजिर्नजिद्गत् ॥४॥
धर्मधाम ११ जपाध्वलखडाव्रीहिकित्तेश्वरका
ग्रन्थमासायानाग्रतीर्थरत्न ॥४॥ ॐ विद्महि विद्महि
तत्रकर्मसुविनाददकुपुत्रानात्रदुक्कृतेश्वर
जगदहते सति प्राणाद्वदतत्रपतश्रीमातादना

उलाषपुत्रपुत्रातिदिसकजनविधित्तर्दका
आआआदकास्वाहा ॥४॥ धर्मधाम ११ जपाध्वल
द्विष्यत्तर्विषाहकर्मज्ञाकिञ्चमानादापञ्चतमा
वृत्तित्रिनाहमापुत्रीशकृत्वाङ्गसिमापुनरपुडी
नाध्वजं धि मिसायातनकधर्मयाज्ञानकर्मत्रयी
ध्वजिगतसदङ्गशत्रुश्रीनातामनयावोरुशत्रु ॥४॥

ॐ गुरु जि तूमसाचावकैकलाउउउ तं ममापी ल्म
ॐ जतिवतीकतीसचनलायकला मिगत्रदाशास
रुमिथतरुतततततततति कतिनूरुत ॥४॥ धुर्मु
ॐ त्रपाक्षिताकिंतवृक्षिममसिललाहं गुरु
ॐ तामत्रथूतीनापअना ॐ मायादि अलाहया

दाषथूतीनापअनाथक्षिताति यानातिस चिनाक्ष
सिमायापातसकू कृतका लाउकू छिनाचि य लाउ
गुरुगुरुपुसिमासंखक प्राय धर्मत्रपाक्ष सिमा
स्वानपुस्य अत्रदूत्रक्षि अत्र सिमा दिगिदि जित
नी शत ॥४॥ ॐ सचसाचानामपुग्या रं मूरंरु नीकूत
गुगुयि ति सलरु दवरागु वात रतूर कि पुती

ग्याक तन्दु तीलं लं नम त्रु हत ॥४॥ थ मं तुं अत्र १
थ अ स त्रु यान तीना अ ह न व त स थ मं वी ना अ
र्या त स्व यो अ ह का तं वि प्र स त्रु पा मि र्या जं अ श न
ॐ वि वि निल के ता क नी ल उ त्ति रु रु रु लं मि
र ना ति नं द्रा दि कं रु क म ड न ह न ॥४॥

थ मं अ त ॥ रा पा अ ख ता नी न वा थ स क त ख त
पा अ ता न कं स त र अ पा ७ द्वा दू थ ख ता न र त
श थ वा थ मं ग पा वि हि सा ता ती ना अ व प ति वा त
ख नू त्रि ना ह स कू कू का तुर चि य मं या दा अ त स
चि य ना ना स त र त सी ती नं श त र त र आ आ अ य

ॐ ज्ञानं चिदं अनांति तिउ लिपलिपजिन हिंश
रुजि तमि त्रि हंरु तं स्वाहा ॥४॥ धर्मन भात ग मिसा
या तना जा के ग नृथव दव दवी रूपी सा रुन ग्राहा
जा के हिना जिन सा धर्म भात १७ ग पाजि त रव ता
न के नी जा के प्रयथ धर्मी सि सा स या ना त धि क्रया
वी सि वि स धि नी रा ८॥

ॐ हाहाहा हर्लं नाराज्ञां ॐ स्वाहा ॥४॥ धर्मन
भात ११ ग पाजि य सिनी मख या जिन का जितल गुरु
ग या ना म जि जि सा धर्म पत्र पाजि द्वा ध स मा रि क
न थ जि त्र नि त रिन न्ना स्वधा त जा प्रयथ हा जि वा ध
स म्भन स्वान वृ ग धा जिन का प्र सखा जिन हा य गुरु

ॐ ह्रीं लीं हिं लिं कुं रुं त स्वाहा धर्मं नवाग्र्यमानस्या
प्रयवाष्टिं थु खलनीश्वर। श्रथवाव ह त जाग्र
मलतया मिखासदा प्रकलनीश्वरः ॥ १२ ॥
ॐ नत्रवाहिं कुं रुं त स्वाहा धर्मं ॥ ११ ॥ नृपाणि धर्म
षर्णेण वसद् कालं विप्रसत्तं न वचन विप्रश्चाम एव न

ॐ श्री गुरुभ्या नमः गुरुभ्या नमः धर्मं न ॥ १२ ॥
श्रुते वा त एव नृपाणि गत सिमा प्राप्ता का प्राप्ता नृपाणि
ज्ञानाणि च कृतिर एव सदा यात यत एव पत द्विज निमदय
क तय सति एव नृसनी च वा त एव थुजा सत कपञ्चानया
नाजातया यातु तिनीप नि वि सद्गम म तया च
नाजातिकां न म वि तैरय एव म इ श त ॥ ११ ॥

ॐ श्री गुरु नारायण सिकातप ह ह ह त सा सा धर्म ॐ त र बीन
ना कवी रवण ॐ मा प्र ह त ॥ ४ ॥ ॐ श्री गुरु नारायण काम स सा
ता धर्म न द्रु म पी सा य प्र ह त ॥ ४ ॥ ॐ श्री गुरु नारायण सती क्रि ता
तिली सा साः धर्म न त ॐ ध्या त श त व त हि सि प्र म् रु त ॐ
१८ म् मा ग ॐ ध्या त स प य हि सि म् रु त ॥ ४ ॥ ॥

श्री गुरु नारायण का थ य ॐ स ल त ॐ १४ रु रू सि त्वा
इ इ ना प हि म मि स रु य न कं न नू मा वं थ ॐ स्ये मा ॐ
न कं का थ य प्र ह त ॥ ४ ॥ ॐ श्री गुरु नारायणः रु न स्व त रु
न ती रुं रु सा सा धर्म त ॐ ध्या त श त ॐ ध्या त या ता ग
लो य श त धर्म ॐ १२ ध्या त म त्मा च रं रु त ॐ ॥ ४ ॥

२७ श्री गुरु सा आ गतृदमीरु शति गतृ साहा धर्म न
 ना गनडा कपुप्रशत भात २॥४॥ ॐ श्री गुरु सा आ गतृ
 नाहं रुत साहाः धर्म न भात ट मिखा सा कपुप्रशत
 ॐ श्री गुरु सा आ गतृदमीरु शति गतृ साहा धर्म न
 ना गनडा कपुप्रशत भात २॥४॥ ॐ श्री गुरु सा आ गतृ
 नाहं रुत साहाः धर्म न भात ट मिखा सा कपुप्रशत
 ॐ श्री गुरु सा आ गतृदमीरु शति गतृ साहा धर्म न
 ना गनडा कपुप्रशत भात २॥४॥ ॐ श्री गुरु सा आ गतृ
 नाहं रुत साहाः धर्म न भात ट मिखा सा कपुप्रशत

ॐ विष्णु साहा धर्म भात ट वानवानत्रा कखानमं तु या
 यकूमात्री पजा यायकूमात्री यासितससा नत याभ्व
 शा याय वित्रीवी मात मिसा यात बुत कं बु बुन वरं रु
 नूतम भा य का य शत स न गुरु सा शा आ श ल ॥४॥



ॐ
श्रीगणेशाय नमः
गुरुगोपाय

श्रीगणेशाय नमः ASHA ARCHIVES	729	
---------------------------------	-----	--



	ॐ	ॐ	ॐ	
	जां	जां	जां	जां
दि	दि	दि	दि	दि
५	व	द न	जं	द न

धर्मो रक्षति रक्षितः
 सत्यं धर्मं च रक्षति
 सत्यं धर्मं च रक्षति
 सत्यं धर्मं च रक्षति
 सत्यं धर्मं च रक्षति

श्री गणेशाय नमः
 श्री गणेशाय नमः



श्री गणेशाय नमः
 श्री गणेशाय नमः
 श्री गणेशाय नमः
 श्री गणेशाय नमः

ॐ श्री कामा
दुपिस्तु स्रग
नीमा लामा दु

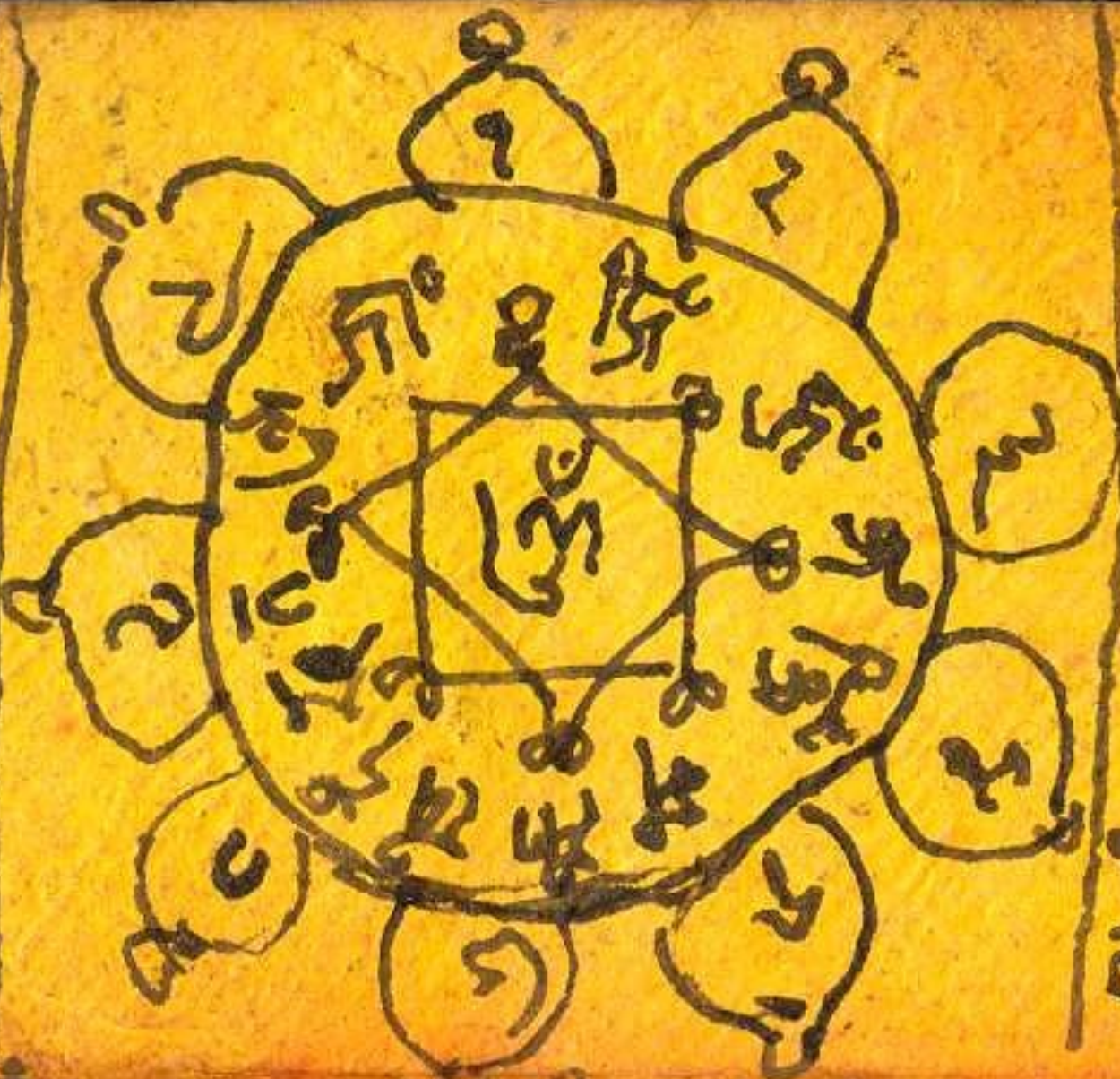


श्री गणेशाय नमः
 श्री गणेशाय नमः

शिवाय नाना भूषण
 यन्मन्त्रान् यन्त्र
 नानाशक्तान् यन्त्र
 शिवाय नाना भूषण

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

अथ नाना भूषण
 यन्मन्त्रान् यन्त्र
 नानाशक्तान् यन्त्र
 शिवाय नाना भूषण



अथ नाना भूषण
 यन्मन्त्रान् यन्त्र
 नानाशक्तान् यन्त्र
 शिवाय नाना भूषण

अथ नाना भूषण
 यन्मन्त्रान् यन्त्र
 नानाशक्तान् यन्त्र
 शिवाय नाना भूषण



अथ नाना भूषण
 यन्मन्त्रान् यन्त्र
 नानाशक्तान् यन्त्र
 शिवाय नाना भूषण

धर्तुर्कृत्सु गतचनद्वपुस अय नादाय प्रज्ञायाम

सं स न
सं स न
न न स न
आ आ आ
आ स न
ग वा श

ॐ श्री श्री जां जां जा	श्री ॐ ॐ किं किं	ॐ श्री श्री ऊं ऊं ऊं
गुं त्रुं त्रुं न न न रुं रुं रुं	जां किं रुं ना ता मन रुं रुं रुं	जां रुं रुं वा च त न

१३ १ ४ ८ ८ १ १२ २१ २

धर्तुर्कृत्सु गतचनद्वपुस अय नादाय प्रज्ञायाम
कायमकृत्सु गतचनद्वपुस अय नादाय प्रज्ञायाम

धर्तुर्कृत्सु गतचनद्वपुस अय नादाय प्रज्ञायाम
कायमकृत्सु गतचनद्वपुस अय नादाय प्रज्ञायाम



साक्षात् १०८

धर्तुर्कृत्सु गतचनद्वपुस अय नादाय प्रज्ञायाम
कायमकृत्सु गतचनद्वपुस अय नादाय प्रज्ञायाम

दसगामोदसगसदं
 गमसगसलसलं



गं गदं तं वा त्रि
 थं थं तं तं तं
 मं गतवा तं तं
 थं स गतं तं तं
 मं गतं तं तं
 गामा य ह का स तं
 नाना तं तं तं
 तं तं तं तं

। ए गति सूत पतसु त सिद्धि तं तं
 कत ग मी त न न सि नि रु तं तं

२२॥ श्री गुरु ॥ ४॥ ॐ श्री गुरु ॥ ४॥ ॐ श्री गुरु ॥ ४॥
 स तु गुरुवत मायी सिद्धि आ गुरु शो ग्रा हुं ह न ड्रा
 ना। अल ३ ज पा ज ती इ हि स प त दा बा ज ख ज ड्रा
 स व्या ना ज न स प त स्वा थ म ख ज ड्रा स प स व्या म
 त थ म य क ल शो ग्रा मा म मा त श ल ॥ ४॥



सुत्रसु तिगुरु आ म स ज ड्रा
 त रं गो वि मः च त द मं द हं द न



धनैरु त रं व रु स ज म सु त र न
 मा न रं ग सु त र न धा मा ज

यथे म सुत्रसु
 दमव सुत्रसु
 यमय सुत्रसु
 १२६८७९ सुत्रसु



अथ प्रथमं त्रयं च दत्तं त्रयं पत्रं
 स च त्रयं च त्रयं नाम इति त्रयं
 वा खा स त्रयं नाम इति त्रयं



अथ त्रयं पत्रं च त्रयं त्रयं
 त्रयं पत्रं च त्रयं त्रयं
 त्रयं



अथ त्रयं त्रयं त्रयं त्रयं
 त्रयं त्रयं त्रयं त्रयं



अथ त्रयं त्रयं त्रयं त्रयं
 त्रयं त्रयं त्रयं त्रयं

[illegible]

ॐ कू कू किं रु खा हाः धर्मं न तात्र न पा यज्ञतः॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय किं नीत्स्व त्वादिह स्वाहा
॥ १ ॥ इन्द्राद्यैः कृतास्तृप्तिर्यत्र कीर्तनीया स्वर्गादियं
नमो भगवते वासुदेवाय स तत्पराय स त्वेष्टा तद्भव
विषयश्च तन्नामा रुद्रश्च प्रियस्तूष्ठा तद्भव

ॐ ॐ कामा आ द वि ॐ न मा रुं ऊं ऊं ३ द इ य प्रि
ऊं र चि ल क्री ऊं द ह स्या हाः ॥ ७ ॥ अं चं त ह
जि न्वा न जि प म ह स्य श्रु कृ ला गी न वी न ॥
त कं श्रु कृ त ज प त पा ष्ठ जि हा तं च्छा जि कं स त

ॐ ॐ ज ग तं त्रि कि श ग्या त्र द कि न्ना ग्या वा त र य यि ता श्रु
वं श्रु ध मे या ज जि ल र य रु पा जि तान कं श्रु त ॥ ७ ॥
सं व न म तू स्य जि ज जि ष् सि स ल ष का या जि रु प्र स
प त र स त द जि त न्म मि सा त या क पा त ल स व पा हा य
द रि स त का त य ध त र य तान कं न नानं व मि रु ल ॥ ८ ॥

[illegible]

लनं गत्रमिन कि विरु म हा ता यात ज्ञं ह सि ता
 धत्र सि यान कं सु ध श य क डं ह श त य त नो उ आ त त

ॐ नमः शिवाय नमो भगवते वासुदेवाय
श्री गणेशाय नमः श्री गुरुभ्यो नमः

ॐ नमो श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो लंगत वा लङ्क
वायनमा ॥ गुरु त्रिकुण्डकुसुमसंभवकृतके गुरुक
सह गुरुका आर्कत्रु गुरु नदिमासि के काश्या ॥
छि ग्यावाउ दरेसन गुरुवाश्यानातायनधनत्रि
गन्यवागवादिन वृक्षामह स्वतसह वाश्या
लुकाउत सिधोसि के रुतसह मरुसदासदम
त

पापनातिरुह मकजुहू तां मतामतामताम
समुद्रुधवा सुधासुचंद्रसुधसमानगुरुल्लग
कीर्तिकीर्तिशेषताध गुरुक सिधोसतचरने गुरु
रसुमासं सुखती गुरुविनू गुरुवृक्षा गुरुगन
पति गुरुवात्रवा ॥ उदरुह्ये दवतासकतग
लूनि न लो नमसका तयाप गुरुश्या गुरुवाच
गुरु कुरु

नयनं यथासनसावायुहसभायस्तत्र॥ जयं यथावाउ ककिसि
जयाअसनसासिकयादातभाय॥१॥ तातात्रजयाथनात्रि
सनसाहेतेनज्ञानभायपद्मदतभाय॥१॥ जयवाप्याडासंभ
नथानात्रिसनसाचक्रिद्रिकम्माङ्गुलभायमवायमदुशल
जयवाङ्गुमाविसाथनात्रिसनसावायुहसभायस्तत्र

वत्ररुंदायाथनात्रीसनसाजयत्रर्गस्तत्रभाय॥१॥ २६ द
सिं किलेनयुथकिंति किंतिधनात्रीसनसापिताखनादत
धिरगातसुदवभायभाय॥१॥ १२ दत॥१॥ जयवाहयूडाया
जयवाहमिवाडाथनात्रिसनसाभवनमखयाडात
सिग॥२१ बुद्धदतभाय॥१॥ कावयाडायाथथनात्री
सनसाभायीवदनकाजितेसियङ्गा११ दतभाय१
दिसापकिमदिसाप्रगतसेतानङ्का५ दयुस्त॥१॥

हि स त्वा च त्वं ज्ञाता तथ्यना सनसा अतुला यशसः पिता त्व
दत्त आय ॥ १६ ॥ अथ वा ध्याता तथ्यना ती सनसा मिता
तात आय ॥ १७ ॥ अथ वा सद्गुरु का
सवदथ्य धना त सनसाना ग दा त्व आय ॥ १८ ॥ वात हि
दत्त आय शत ॥ १९ ॥

अथ वा त्वा मनसु या ध्याना त सनसा अतुल्य
आय शत ॥ २० ॥ अथ वा लख ज्ञाता मिता नथ्य धना
ती ससा त्रयि सा च य दा त्व आय शत ॥ २१ ॥ आय शत
अथ वा त्वं ज्ञाता तथ्यना सनसा सि कत धि त आय
उत्त दि सा ता यव त्व नय मा त ना ता द्वि आय का गी मि

रथवाधूगजमानसवथुधनातीसनसापाननशासा
मदुउपकातमइशासातममम्यातपकसिनीस्यस
नयधूनकतशत॥४॥ ॐ॥ श्रावाश्रति द्वावतनकाक
नात्रिसनधना ॐ गहिर्तिवतताकभात्रस्याद्रुस्य
कद्रुतिप्रिजद्रुपा ॐ यवतं त्वाप् यवतं शकृ यवतं

धरुधनायापुलाग्यानीश्राक॥ नसिस्तधमक्रेति
इति सिमा ॐ मि त्रशयूरत॥४॥ श्रधवानीकृ स्रसग
मापुनषाउसंनतीसनसाकिमिदा ॐ सियश्रत
धमा ॐ सत्रकउ यत्रमीसद्रुमसवाश्रगकद्रुय
रूनयाप्रतयसनमा ॐ तीनकंशदि ॐ वा रपुनश
ॐ श्राकाकृकिमीकृनासमइइतत्या ॐ ॥४॥